ISSN: 2454-5503

CHRONICLE OF HUMANITIES AND CULTURAL STUDIES

A Peer Reviewed Bimonthly International Journal

VOL. 4 NO. 6 SPECIAL ISSUE DECEMBER 2018 IMPACT FACTOR:4.197(IIJIF)

Special Issue On

PROBLEMS AND CHALLENGES BEFORE THE WORKING WOMEN

Guest Editor
Dr. Vasant Satpute

Associate Editor
Dr. Sunita Tengse
Assistant Editor
Dr. M. B. Patil

Late Ramesh Warpudkar (ACS) College
Dist. Parbhani

19. कामाच्या ठिकाणी होणाऱ्या महिलांचा लैंगिक छळ व भुमिका संघर्ष |
राजश्री पांचाळ 93

20. प्रसुतीपुर्व लिंगनिदन प्रतिबंधक कायदा 1994 |
डॉ. भारत भो. राठोड 97

21. नांदेड जिल्ह्यातील लिंग गुणोत्तराचा अभ्यास |
शंकर सटवाराव जाधव 100

22. ग्रामीण भागात नोकरी करणाऱ्या महिलांच्या समस्या |
ए. बी. वाळके 107

23. नोकरी करणाऱ्या महिलांच्या कौटुंबिक समस्या : एक अभ्यास |
माने उषा यशवंतराव 112

24. कामकाजी महिला व पुरूषसत्ताक मानसिकता |
डॉ. मोहन मिसाळ 117

25. महिलाओं की पारिवारिक समस्याएँ और मनोविज्ञान |
डॉ. पांडुरंग दुकळे 120

26. हिन्दी कथा साहित्य में चित्रित कामकाजी नारी |
डॉ. कुलकर्णी वनिता बाबुराव 124

27. कामकाजी नारी समस्या- सुझाव |
डॉ.शारदा राऊत, अर्चना बदने 123

28. स्त्री चेतना और मानवाधिकार | **डॉ. वडचकर एस.ए.** 138

29. Legal Rights and Protection of Working Women
Dr. Ambadas Pandurang Barve 142

30. Dilemma of a Working Mother
Harsha Rana 147

31. Cyber Crime and the Working Women: A Critical Overview
Dr. Vasant D. Satpute 153

32. Problems Faced by Women in Workplace....
Varma Vishal Parashram & Varma Priya Parashram 157

33. Mee Too Movement and Working
Dr. Ahilya Bharatrao Barure 161

Late Ramesh Warpudkar (ACS) College, Sonpeth
Dist. Parbhani

26

हिन्दी कथा साहित्य में चित्रित कामकाजी नारी

डॉ. कुलकर्णी वनिता बाबुराव
हिन्दी विभागाध्यक्षा
कै रमेश वरपुडकर महाविद्यालय, सोनपेठ जि. परभणी

आज आधुनिक युग में शिक्षा तथा कानून के प्रभाव नारी-हर किसी क्षेत्र में पुरुष के कंधे से कंधा लगाकर अपनी कामयाबी दिखा रही है । वह आदमी के साथ कदम मिलाकर चलना चाहती है । वह जानती है स्त्री-पुरुष जीवन यात्रा में बराबर के सहयोगी है, एक-दूजे के पूरक है। भारत में भी भूमण्डलीकरण का पूरा असर है, उसकी जीवन शैली में बदलाव आ गया है । वह इस प्रतिस्पर्धा के युग में प्रतिस्पर्धी बनकर खडा होना चाहती है तथा अग्रिम पंक्ति में अपनी उपस्थिति दर्ज करना चाहती है ।

आजादी के पश्चात बदलता हुआ परिवेश राष्ट्र की त्रासदी, विभाजन विस्थापन तथा आर्थिक व्यवस्था के बदलाव से उपजी परिवर्तित सामाजिक स्थिति ने सबसे अधिक नारी को परिवर्तित किया इस परिवर्तन से उपजे नैतिकता का प्रश्न, मुल्यहीनता एवं कई प्रश्नों से नारी घिर गई । वैज्ञानिक परीक्षण से प्राप्त नई नैतिकता व नये मूल्यों का जन्म लेना एक स्वस्थ झोंका था । रुढियों एवं वर्जनाओं से घिरी नारी को अपराध बोध पापलोध से मुक्ति मिली । धार्मिक संकीर्णता के बंधन ढीले पढने से नारी में नई चेतना का विकास हुआ । शिक्षा ने उसके कदम दफ्तर की ओर बढा दिए । शहरीकरण,औद्योगिकरण ने उसे चलने का विश्वास दिया ।

बींसवी शती के अंतिम चरण तथा इक्कीसवीं शती के पूर्वार्ध में हमारा जीवन कई विषय समस्यों का शिकार बन चुका है । आज इस लोकतांत्रिक व्यवस्था और वैज्ञानिक विकास के बावजूद भी हम स्वस्थ जिन्दगी जीने के लिए मोहताज बन गऐ है । एक सर्वसव्यापक विषय परिवेश में विविध समस्याओं के साथ जूझते रहना हमारी नियति बन चुकी है । इस नियति की शिकार पुरुषों की अपेक्षा नारी अधिक है ।

'दहलीज' के पार की दुनिया ने नारी को अन्मुक्त किया । नारी घरेलू दायरे से बाहर निकल दुनिया के बीच में जाकर अपनी समझ को बडा कर रही है । वह स्वयं दफ्तर, विद्यालयों एवं व्यवसाय में हाथ बढा रही है और आत्मनिर्भर हो रही है, साथ ही घर पर काम करनेवाली कामकाजी औरतों को रोजगार भी दे

Late Ramesh Warpudkar (ACS) College, Sonpeth

रही है । भूमंडलीकरण के इस दौर में देखा गया है कि, मध्यवर्ग की शहरी नारी को इसका अधिक लाभ मिला । गाँव में रहने वाली नारियों के लिए अभी रोजगार के अवसरों का अभाव है । उन्हें रोजगार की तलाश में शहरों की और अधिक पलायन करना पडता है और वहाँ भी उन्हें रोजी-रोटी के लिए दर-दर भटकना पडता है । मजबूरी में वे कभी गलत हाथों में पड जाने के कारण शोषित एवं उत्पीडित भी होती है । सरकार ने कानून बनायें है पर वे पूरी तरह कहाँ लागू होते है । सरकार नारी अत्थान पर सुरक्षा और कल्याण कार्यो के लिए बजट भी पास करती है पर कितना पैसा ईमानदारी से उनके कल्याण में लगता है । यहाँ गरीब औरतें शिक्षा, स्वास्थ्य और नौकरियों के मामले में आज भी पिछडी है । नारी ने पिछले दो दशकों से अधिकारों की बात उठाई है । बराबरी के दर्जे के लिए संघर्ष भी किया है । कानून ने भी मदद की है । स्त्री हर समय समाज का संवेदनशील मुद्दा रही है । उसके प्रश्नों के हल करने के लिए यथार्थवादी नजरिए की ओर आना पडेगा । उसकी पराधीनता के कई इलाके है इसलिए लडाई भी दुस्कर है । जहाँ कहीं उसने शक्ति से काम किया, परिवारों में तनाव बढे है । रिश्ते चरमराये हैं । इस प्रकार स्त्री को आधुनिक स्वाधीन छवि के प्रति सहज होने के प्रति समाज में तैयारियाँ कम है । नारी उपभोक्ता भी हे और उपभोग्या भी । दोंनो एक साथ भारतीय समाज पूँजीवादी विलासिता के द्वारा नारी को वस्तु में बदल रहा है, मीडिया भी उसे नंगा दिखा रहा है फिर भी वह परेशान नहीं है वह धीरज के साथ अपने मार्ग पर चल रही है । उसको अपने कैरियर के बनाने की चिन्ता हो चली है जिससे होकर वह स्वावलंबन के लक्ष्य तक पहूँचेगी फिर उसे पुरुष बैशाखी की आवश्यकता नही रहेंगी । अपनी पीडा को भूल जायेगी नारी अपने आपकों समर्थ और सबल बनाकर ही अपने अधिकार अर्जित कर सकती है । जहाँ तक परिवार, समाज शिक्षा तथा नौकरी का पक्ष है । नारी बराबर के साझेदार के पक्ष में है । नारी को पुरुष की भाँति ही परिवारिक कार्यो में अपनी राय व्यक्त करने का अधिकार मिलना चाहिए । अनादि काल से नारी जाति का चहुँमुखी शोषण होता रहा है । आज नारी को ऐसे ही शोषण से मुक्त कराने के प्रयास हो रहा है । इसीलिए आज के युग को महिला जागरण का युग कहा जा रहा है । "अब नारी के अधिकारों, सुरक्षा के लिए अनेक नियम एवं अधिनियम बनाये जा रहे है । नारी के अधिकारों के प्रति नवीन चेतना सर्वप्रथम पश्चिम में दिखाई देती है ।"1 डॉ. ओमप्रकाश शर्मा के अनुसार "संयुक्त राष्ट्र संघ द्वारा घोषित अन्तरर्राष्ट्रीय महिला वर्ष के दौरान यह महसूस किया गया की दुनियाँ की बाते तब तक निरर्थक है, जब तक कि, असामन स्थिति की शिकार महिलाओं को बराबरी का दर्जा नही दिया जाता । सामाजिक नवनिर्माण में महिलाओं के बारे में नए ढंग से सौंचने के लिए प्रेरित किया । सन 1976 ई. से.

Late Ramesh Warpudkar (ACS) College Sonpeth Dist. Parbhani

1985 तक का अंतराष्ट्रीय महिला दशक सन 1975 'बर्लिन' में हुए विश्व महिला सम्मेलन घोषित किया गया । इससे पुर्व 19 फरवरी 1972 ई. में जिनेवा की संयुक्त राष्ट्र की एक बैठक में महिला वर्ष का आयोजन करने का विचार आया था । इसका ध्येय महिलाओं के सामाजिक, राजनीतिक, मानवीय पक्षों का विकास करना था ।'' 2 सौ से अधिक देशों में यह दशक विभिन्न नीतियों, योजनाओं, कार्यक्रमों आदि के तहत मनाया गया समाज में और उससे ज्यादा स्वयं महिलाओं में जागृति आयी तथा अनेक महिला संगठनों का निर्माण हुआ जिनके माध्यम से लाखों महिलाओं में अस्तित्वबोध व आत्मविश्वास जगा । अंतर्राष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य में अपनी समस्याओं का सामना करने की एक नई ऊर्जा इन्हें मिली । इस प्रकार महिला वर्ष और महिलाओं सहित पूरे समाज में महिला मुद्दों के प्रति चेतना जगायी ।

स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात नारियों की स्थिति सुधारने के लिए अनेक प्रयत्न किये गये, स्वतंत्र भारत में स्त्रियों के अधिकार पुरुषों के प्रायः समान हो गये । स्त्री प्रत्येक क्षेत्र में आगे बढने लगी । समाज में दीर्घ काल तक अत्यंत उपेक्षित और असम्मानीत स्थान नारी का रहा था । नारी पथ की दावेदार बनकर प्रत्येक क्षेत्र में सामने आयी है । वैद्यक व्यवसाय क्षेत्र, घरेलू उद्योग व्यवसाय, कृषक विभाग, साहित्य क्षेत्र, में नारियाँ विकास के पथ पर अग्रसर हे । परन्तू स्त्रियों को भिन्न-भिन्न क्षेत्रों में कार्य करते समय भिन्न-भिन्न प्रकार की समस्याओं से गुजरना पडता है ।

कर्तव्य परायण भावुक समर्पिता, नारी के अलावा, पुरुषों की सौदागिरी बुध्दि से उपेक्षित अकेलेपण अस्वस्थता तथा फैशन के लोग से बनी अंतर्द्वद्व और उनसे बनी पीडा आदि विविध समस्याओं से जूझती नारी मानसिकता को कृष्णा अग्निहोत्री जी ने अपनी कहानियों में शब्दबध्द किया है । इसीलिए कहा गया है कि, ''पुरुषों के सामन्ती और भोगवासी वैक्टसी नजरिये से चुभी हुई बिंधि हुई समर्पित भावुक नारी की मूक चीत्कार को यदि किसी ने अपने मजबूत कथाकारों और तिलमिला देनेवाली समस्याओं से व्यक्त किया है तो वह है कृष्णा अग्निहोत्री ।''3

लेखा संग्रह की 'अभिशप्त' कहानी में कामकाजी नारी को आज भी पैसे कमाने की मशीन भर समझा जाता है । उससे विवाह भी इसलिए किया जाता है ताकि वह अधिक से अधिक धन कमाकर लाये लेखा ने आपनी बहन का अंत देखा था । अतः डॉक्टर बनने के बाद उसने विवाह के बारे में सोंचना ही छोड दिया । अपने ही शहर में उसे जॉब मिला था । उसी समय उनके घर शेखर किरायेदार के रुप में आया है वह कॉलेज में कॉमर्स का व्याख्याता था । वह लेखक के लिए रोज नये-नये उपन्यास लाता है, दोनो की शादी होती है लेखा से वह शादी इसलिए करता है कि वह एक बडा नर्सिग होम बनाए नर्सिंग होम की नीव तो

पैठ गयी परन्तू [illegible] अधिक काम करने से लेखा पीली पड गयी । फ्रिज, टि.वी. घर में [illegible] भी आनेवाली थी । शेखर लेखा का उत्साह बढाता पर खुद कुछ नही करता, खुद प्राईवेट ट्युशन नही लेता पर पत्नी को प्राईवेट प्रेक्टिस करने केलिए कहता । यह कानी घर-घर की है ।

कृष्णा अग्निहोत्री की 'सिसकते सपनो की शाम' कहानी में मीरा कामकाजी नारी है उसने नौकरानी सलौनी से वह परेशान है । उसका पति घर के मामले में उसकी कोई मदद नही कर सकता । ''दिन भर नौकरी करने के बाद बच्चे संभालना, भोजन जुटाना आदि उससे अब नही हो पाता । पति महाशय भी ऐसे है कि हर काम उसी से करवाते है । कमाना तो कम है परंतु आदते रईसजादों की है । अपना शरीर और कपडे भी नही सभाल सकता । कामकाजी नारी को एक साथ कई फ्रट पर लडना पडता है । जहाँ पर वह कार्य कर रही है । फिर गृह-ग्रहस्थी की सारी जिममेदारियों को निपटाने में । बच्चो की जिम्मेदारीयाँ, रिश्तेदारियाँ, निभाने में और अंत मे पति महाशय की सेवा करने में । उसकी कमाई पर न उसका हक है न उसका सामाजिक मुल्य सबसे अधिक त्रासद स्थिति कामकाजी नारी की है उसे तीन-तीन, चार-चार मोर्चो पर लढना पडता है पति की जिम्मेदारी, दफ्तर की जिम्मेदारी, परिवारिक सम्बन्धों की जिम्मेदारी, बच्चों की जिम्मेदारी, एक साथ निभाते-निभाते वह थक जाती है । बाहर सम्मान है पर घर मे ंअपमान ।

जैनेद्रकुमार 'कल्याणी' उपन्यास में वैद्यक क्षेत्र में काम करनेवाली नारी की समस्या को चित्रित करते है । उपन्यास की नायिका 'कल्याणी' डॉक्टर है । उसका विवाह भी डॉक्टर असरानी से होता है । पती-पत्नी दोनों मरीजों की जाँच तथा इलाज करते है । अस्पताल में मरीजों की भीड कल्याणी की और अधिक होने लगी यहाँ डॉ. असरानी का अभिमान हावी हो जाता है । परिणामतः पती-पत्नी के बीच आपसी संघर्ष शुरु होता है । वह कल्याणी पर वैद्यक व्यवसाय में मर्यादाएँ डालता है, की पत्नी सिर्फ स्त्री मरीजों का इलाज करे । सच देखा जाए तो एक डॉक्टर अपने व्यवसाय क्षेत्र मरीज स्त्री है या पुरुष एसा भेद कभी नही करता इसी दायित्व को निभानेवाली कल्याणी को पति द्वारा अपमाणित होना पडा, थप्पड भी खाना पडा, ऐसी मानसिकता पीडा को झेलती हुई कल्याणी जिन्दगी काट रही है । कल्याणी खुद धन कमाती है फिर भी वह सुखी है ऐसा अनुभव नही कर पाती । क्योंकि सुख का सबन्ध व्यक्ति के अंतरिक भावनवाओं से होता है । बाह्य स्वरुप में कल्याणी स्वतंत्र नारी के रुप में दिखाई देती है, लेकिन घर-परिवार में वह पति द्वारा बनायी गयी मान्यताओं के फ्रेम में फिट है यह नारी जीवन की व्यथा है ।

Ramesh Warpudkar (ACS) College

Late Ramesh Warpudkar (ACS) College Sonpeth Dist. Parbhani

चित्रा मुदगल के कथा साहित्य में विभिन्न कार्यालयों में कार्यरत नारियों की दफ्तर की समस्याएँ भी अनेक है । जिनमें सहयोगीयों की यौन विकृति और अशलीलता प्रमुख है । 'दरमियान' कथा में घर-दफ्तर के कार्यो की अधिकता से उत्पन्न मानसिकता थकान के कारण अचानक उत्पन्न 'मासिक धर्म' की पीडा आकांक्षा को इतना आहत कर देती है कि वह यह सोचने को विवश हो जाती है की, ''क्या हुई वह औरतजात औरत होना नरक है नरक''4 उपर से दफ्तर के पुरुष सहयोगी अपनी घृशित योण टिप्पणियों और हरकतों से वहाँ के माहोल को इतना बदबूदार बनाए हुए है की ''पुरुष के थोथे संकीर्ण परम्परावादी विचारों से आक्रान्त 'प्रमोशन' कथा का सुभाष पत्नी की तरक्की के पचा पाने में असमर्थ है । इसलिए पत्नी के प्रमोशन में उसकी काबलियत न मानकर उसके बाँस कोठारी कें अवैध संम्बधों का झूटा लांछन लगाकर परिवारिक हित की दुहाई न देकर नौकरी छोडकर घर बैठने का फरमान जारी करता है । अन्याय उत्पीडन और शोषण के विरुध्द लेहाद लेखिका के व्यक्तित्व की पहचान है, जो उनकी कथाओं में नारी चरित्र के रुप में मुखर हुई है,'' ''मुआवजा'' कथा में विमान परिचारिका शैलु ससुरालवालों द्वारा आर्थिक दोहन मानसिक उत्पीडन के खिलाफ ससुराल का परित्याग कर मायके आ जाना और अपनी संपत्ती नारी निकेतन को दान देने का संकल्प जिससे निराश्रित महिलाएँ स्व रोजगार की दिशा में तत्पर होकर पैरों पर खडी हो सके ये सभी तथ्य नौकरी पेशा नारी के 'स्व' के विस्तार गंभीर चिन्तन एवं शोषण के विरुध्द बगायवत के परिचायक है ।'' 4 चित्रा मुदगल की कहानी 'सुख' की फूली कामकाजी नारी है । वह अपने जीवन की व्यस्तता को व्यक्त करती है, ''हमारी ऐसी किस्मत कहाँ दीदी ।.... बासन भाँडे निपटाते वैसे ही देर हो जाती है फिर टाईम बेटाईम नींद आती है ?''5

इस प्रकार चित्रा मुदल द्वारा लिखित बहुत सी नायिकाएँ आत्मनिर्भर होकर जीवन जीने का प्रयास कर रही है ।

सदियों से परदे में बंद स्त्री आत्मनिर्भर बनने की कोशिष में कार्य प्रवण एवं स्वावलंबी बनने की और अग्रसर होती है । स्वयं मैत्रे भी पुश्पा के ही शब्दों में ''सन 1980 के बाद जो पीढी उठी है । स्त्री की लडकियों की अस्पताल मे कचहरियों में थानों मे, एअरपोर्ट में कहाँ नही है लडकियाँ ? सब जगह छा गयी है ।'' 6 'झूलानट' की शीलों परित्यक्त स्त्री है । मेहनत कर खेत में उगाए गए अनाज को बाजार में ले जाकर बेचती है और आई हुई रक्कम बैंक में ले जाकर जमा करती है ।

'इदन्नमम' की मंदा कर्तव्य परायण एवं स्वावलंबी स्त्री है । अपने सोनपुरा गाँव में लगे हुए क्रेशर पर गाँव के ही मजदूरों को काम दिलाने के लिए मालिको को बाध्य बनाती है । गाँव समाज के लिए भूमिहीन मजदूरों को स्वावलंबी एवं

कर्मठ बनाने के लिए गाँव में चर्चा करती है । मंदा के स्वावलंबन के बारे में स्वयं डॉ. कृष्ण देव मौर्य कहते है "मंदाकिनी स्वावंलंबी और साहस के साथ संघर्ष करती हुई मंजिल प्राप्त करती है । 7"

यह युग सत्य है कि समर्थ को पूजा जाता है और उपयोगी को पूछा जाता है । आज के युग की माँग है कि नर नारी को अपनी बराबर की सहयोगिनी मानकर चले, दासी और देवी की गरिमा से मुक्त कर उसे मानवी बनने का अधिकार दे। अधिकार दे उसे आदमी की तरह जीने का तब ही जीवन कुण्ठारहित हो सकेगा ।

संदर्भः-

1) चित्रा मुद्‌गल के कथा साहित्य में नारी- डॉ. राजेंद्र बाविस्कर- पृ. 227.

2) समकालिन महिला लेखन- डॉ. ओमप्रकाश शर्मा, पृ. क्र. 119.

3) कृष्णा अग्निहोत्री की कहानियों मे नारी-बालाजी श्रीपती भूरे- पृ.43

4) चित्रा मुदुगल के कथा साहित्य में नारी-डॉ. राजेंन्द्र बाविस्कर-पृ.144-145

5) जिनावर- चित्रा मुद्‌गल- पृ. 47.

6) हिन्दी साहित्य की कतिपय विशिष्ट महिलाएँ एवं उनकी रचनाएँ-डॉ. देवकृष्ण मौर्य- पृ. 203.

7) स्त्री चिन्तन की चुनौतियाँ- डॉ. रेखा कस्तरवार, पृ. 214.

❑❑❑

PRINCIPAL
Late Ramesh Warpudkar (ACS)
College, Sonpeth Dist. Parbhani